Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन

PARUL TYAGI[1] & DR. ANOJ RAJ[2]

[1]Research Scholar (Ph.D.), Dept. of Education, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut
[2]Professor and Head, Dept. of Education, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut

सारांश

विद्यार्थियों के विषय में शिक्षा एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। विद्यार्थियों की संगीत की शिक्षा से सम्बन्धित आकांक्षाओं को शैक्षिक परीक्षाओं एवं सम्बन्धित मापनियों के माध्यम से ही आंका जा सकता है। जो शिक्षकों और शोधार्थियों के द्वारा निर्मित या मानकीकृत परीक्षण होते हैं। अतः इस शोध पत्र में आरक्षित वर्ग संगीत में संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया गया है। शोध में अध्ययन के लिए गाजियाबाद जिले के माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के संगीत में रूचि रखने वाले 200 विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चुना गया है। जिसमें 100 छात्र और 100 छात्राऐं सम्मिलित है जोकि ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों से सम्बन्धित हैं। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत डॉ. महेश भार्गव एवं स्वर्गीय प्रोफेसर एम.ए. शाह द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग आंकड़ों के संग्रहण करने हेतु किया गया है। आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान और टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा परिणामों से स्पष्ट होता है कि आरक्षित वर्ग (अनुसूचित जाति) के संगीत में रूचि रखने वाले शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर है। ग्रामीण विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया जबकि लिंग के आधार पर आंकड़ों के विश्लेषण से विदित है कि संगीत में रूचि रखने वाले छात्रों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर छात्राओं की अपेक्षा उच्च पाया गया परन्तु यह अन्तर असार्थक है।
शब्द कुंजी- शैक्षिक आकांक्षा स्तर, आरक्षित वर्ग, संगीत शिक्षा

भूमिका

भारत देश एक जनतंत्रीय देश है। भारतीय गणतंत्र पूर्णतः धर्म निरपेक्षता एवं समानता के सिद्धान्तों पर आधारित है। भारतीय संविधान समाज के विशिष्ट वर्ग अर्थात विभिन्न जातियों जैसे अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं पिछड़े वर्गों को समाज व अन्य वर्गों के अनुरूप बनाने हेतु एक विशेष ढंग से राजनीतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक अवसरों को प्रदान करता है

शिक्षा किसी भी मनुष्य के जीवन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा समाज की उप-प्रणाली होने के नाते समय-समय पर व्यक्ति को इसके अनुकूल ढालने, सुधारने और आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा को सम्पूर्ण समाज के सन्दर्भ में एक शक्तिशाली स्तम्भ के रूप में परिभाषित किया जाता है। मानव जीवन में शिक्षा का सम्बन्ध नागरिकों के राष्ट्र की संस्कृति और उसके समग्र व्यवहार से होता है। शिक्षा व्यापक अर्थों में मानव के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसके माध्यम से यह व्यक्ति राष्ट्र और समाज के समग्र विकास के लिए एक अनिवार्य अंग बन जाती है। (महारथ कुमार, 2022)

एक मात्र मनृष्य ही ऐसा प्राणी है जिसे विकास हेतु शिक्षा, सामाजिक मूल्यों के मानदण्डों को समझने के लिए अपनी संस्कृति और धर्म की आवश्यकता होती है (संजय राय, 2018)। आजादी के 70 वर्षों के उपरान्त भी समय की आवश्यकता व परिवर्तन के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में अर्जित की गयी कामयाबी व उपलब्धियों का विश्लेषण करते हुए शिक्षा की प्रमुख भूमिका से अवगत होते हुए अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति आदि वर्गों के बीच शैक्षिक उपलब्धता और प्रगति को देखना बहुत आवश्यक है। भारत में समाज कई वर्गों में विभाजित है, जिसमें अनुसूचित जाति वर्ग समाज की संरचना की श्रेणीबद्ध पढ़ाव पर अंतिम स्थान पर रहा है (डॉ0 राजीव रंजन, 2020)। भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था के आधार पर समाज को उनके कर्मों के अनुसार चार वर्गों में विभाजित किया गया है (1) ब्राह्मण, (2) क्षत्रीय, (3) वैश्य तथा (4) शूद्र। भारतीय स्वतंत्रता के बाद कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए हमारे भारतीय संविधान में कुछ योजनाएं प्रदान की गयी हैं तथा संविधान में पिछड़े वर्ग (जातियों) को सरकारी सेवाओं,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

शैक्षिक संस्थानों में आरक्षण का प्रावधान किया गया। अर्थात जिस वर्ग के लोगों को सरकार द्वारा समानता के अवसर दिलाने के लिए सरकारी नौकरियों व व्यवसाय और शिक्षा आदि में आरक्षण प्रदान किया गया उसे आरक्षित वर्ग कहा गया है।

संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों तथा रूचि न रखने वाले विद्यार्थियों के बीच शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में अध्ययनों के आधार पर काफी अन्तर पाया गया है। संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों को सकारात्मक दृण्डता का मजबूत होना पाया गया (वेलेन बर्गर, नियोलस, मोलाट डिर्क, 2018)

संगीत एक मूल्यवान कला है जिसका उपयोग दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लगभग सभी विचार में किया जाता है (रैकस फ्राइडे ओगोरोन्टे, ए0 इलाह सोलेमा 2021)।

भारत के संविधान में अनुच्छेद 342 के तहत 700 से अधिक अनुसूचित जाति देश के विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में फैली हुई हैं, जोकि समाज के अन्य वर्गों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में खुद को बहुत मुश्किल में पाती हैं। मौहम्मद जाबिर खार (2018)। अर्थात् हमारे भारतीय संविधान में आर्थिक एवं शैक्षिक रूप से कमजोर वर्गों के लोगों के हितों की रक्षा करने हेतु आरक्षण की व्यवस्था की गयी। अर्थात् जिस पिछड़े वर्ग के लोगों को सरकार द्वारा समानता के अवसर दिलाने के लिए आरक्षण प्रदान किया गया उसे आरक्षित वर्ग कहा गया। फलतः आरक्षित वर्गों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति पर अनुकूल प्रभाव पड़ा और इन वर्गों में एक सामाजिक चेतना का विकास हुआ, जिससे इन पिछड़े वर्ग के शैक्षिक आयामों के बड़े स्तर को प्रभावित किया और इनका शैक्षिक आकांक्षा स्तर भी प्रमुख रूप से प्रभावित हुआ।

शिक्षण में संगीत में रूचि रखने वाले आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को उनके शैक्षिक आयाम को जेसे शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर संगीत के प्रभाव पर भी अधिक ध्यान दिय गया। तियानयिंग वांग (2022) संगीत द्वारा छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के साथ-साथ उनके शैक्षिक आयाम शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर भी प्रभाव देखा गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (1.1) के सन्दर्भ में चाइल्डहुड केयर ण्ड एजुकेशन में मुख्य रूप से गतिविधि आधारित, खेल आधारित और बहुत स्तरीय शिक्षा को आधार बनाया गया हैं जैसे स्तर, भाषा, संख्या, बाह्य कठपुतली, संगीत आदि गतिविधियों को शामिल कर, सामाजिक, मानवीय, नैतिक शिष्टाचार आदि को विकसित करने में महत्वपूर्ण ध्यान दिय गया है।

इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (4.15) के आधार पर बालकों को शैक्षिक, सामाजिक और तकनीकी प्रगति में भारत अपनी मातृभाषा का होना बहुत बड़ा लाभ है। जिसमें लिखी गयी फिल्म, संगीत और साहित्य भारत की राष्ट्रीय धरोहर और प्रमुख पहचान है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (4.17) के आधार पर विद्यार्थियों को संगीत, राजनीति, नाटक कविता आदि को संस्कृत साहित्य भाषा में देने में जोर दिया गया जिसके आधार पर छात्रों को इत्यधिक कौशलों को निखार एक सुदृढ़पथ दिया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (7.5) के अनुसार राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश की सरकारों द्वारा 2025 तक स्कूलों की संख्या को समुचित रूप देने के लिए नवीन प्रक्रिया के माध्यम से संगीत को भी हर स्कूल में पढ़ाने के लिए संगीत में रूचि रखने वाले सभी वर्ग के विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त संख्या में परामर्शदाता और शिक्षक को मौजूद करने का प्रावधान किया जाएगा। जिससे की उनके आकांक्षा स्तर को निखारा जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (4.21, 5.25, 7.7, 11.7, 12.3, 12.7, 15.4, 22.1, 22.4, 22.8, 22.9, 3) आदि में भी शिक्षा में संगीत के महत्व को दर्शाते हुए सुदृढ़ रूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

शैक्षिक आकांक्षा शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण चर है। यह सफलता की इच्छा विशेष शैक्षिक क्षेत्र में सफल होने के लक्ष्यों के विकास पर ध्यान केन्द्रित करती है (डॉ0 नील रतन 2018)।

आइजनेक (1972) के अनुसार ''किसी लक्ष्य के संदर्भ में विद्यार्थियों की आगामी उपलब्धि का स्तर जिसे वे प्राप्त करने की उम्मीद रखता है आकांक्षा स्तर कहलाता है। आकांक्षा स्तर एक व्यक्ति की भविष्य की अपेक्षा या महत्वकांक्षा है (शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी-महेश भार्गव)। आकांक्षा के स्तर की अवधारणा सबसे पहले 1931 में लेविन के एक छात्र, डेम्बो द्वारा शुरू की गई।

हॉपी (1930) ने आकांक्षा के स्तर को किसी व्यक्ति की उपेक्षाओं, लक्ष्यों या दिये गये कार्यों में अपनी भविष्य की उपलब्धि के दावों के रूप में परिभाषित किया। फैकें ने हाँपी की आकांक्षा के स्तर की अवधारणा को परिभाषित किया और परिभाषाओं के आधार पर आकांक्षा स्तर का अर्थ है जब कोई व्यक्ति किसी कार्य में सक्रिय रूप से शामिल होता है, तो वह स्वयं को प्राप्त करने के लिए एक नया मानक या लक्ष्य निर्धारित करता है। वह उत्कृष्टता हासिल करने की कोशिश करता है और पहले की तुलना में बेहतर करने का प्रयास करता है। हर नए प्रयास में अपने लक्ष्य को बढ़ाता है। यदि वह उस स्तर तक पहुँचने में सफल हो जाता है। जहां वह पहुँचने की अपेक्षा करता है या यदि वह अपेक्षित स्तर से अधिक स्तर प्राप्त करता है, तो वह सफलता का अनुभव करता है, जो न केवल उसे संतुष्ट करता है, आगे बढ़ने के लिए एक प्रेरक शक्ति का काम करता है। दूसरी ओर यदि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रहता ह। तो उसे असफलता की भावना का अनुभव होता है।

किसी व्यक्ति का आकांक्षा स्तर उस व्यक्ति की अपेक्षाओं की महत्वकांक्षा है। यह किसी दिए गए कार्य में उसके भविष्य में प्रदर्शन के अनुमान को सन्दर्भित करती है (सैंथिल राजा, 2018)।

नारायण (2023) तथा अन्य के अनेक अध्ययनों से पता चलता है कि सभी वर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा लगभग समान है और यह सुझाव दिया गया कि सभी वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के विकास के लिए अभी शैथ्क्षक आकांक्षा का विकास किया जाना जरूरी है।

शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक आकांक्षा स्तर शैक्षिक लक्ष्यों को दर्शाता है, जो एक व्यक्ति स्वयं के लिए निर्धारित करके उन्हें प्राप्त करने की उत्कृष्ठता रखता है। शैक्षिक आकांक्षा स्तर बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति को शैक्षिक लक्ष्य प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित और सक्रिय करता है (मार्ककेयर, 2014)।

समस्या यह है कि शिक्षा ग्रहण करते समय आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर परिपक्व ना हुआ तो उस स्थिति में छात्रों का विकास और कार्य करने की दशा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। जिससे उनका स्तर प्रभावशाली नहीं हो सकता। इसी पक्ष को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्ता ने इस वर्तमान अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्य निर्धारित किये-

अध्ययन के उद्देश्य

- आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
- आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

- आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण और शहरी छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि एवं शोध न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों की प्रकृति के अनुसार सर्वेक्षण विधि को उपयोग में लाया गया है। शोध में गाजियाबाद जिले के माध्यमिक स्तर के संगीत में रूचि रखने वाले आरक्षित वर्ग के कुल 200 छात्र और छात्राओं के चयन हेतु सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि प्रयुक्त की गयी। जिसमें 100 शहरी और 100 ग्रामीण परिवेश से सम्मिलित किये गये हैं। अध्ययन में संगीत में रूचि रखने वाले आरक्षित वर्ग के छात्रों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापने के लिए महेश भार्गव और एम0 सहाय द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया तथा अध्ययन में आकड़ों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान व टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थापन

उद्देश्य-1 आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना-1 आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण और शहरी छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका-1 आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर

शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम	क्षेत्र	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी-प्राप्तांक	सार्थकता स्तर 0.5
लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S)	ग्रामीण	100	5.97	2.68	4.66	सार्थक
	शहरी	100	4.48	1.74		
उपलब्धि विसंगति स्कोर (G.D.S)	ग्रामीण	100	-3.66	2.1	1.11	असार्थक
	शहरी	100	-3.35	1.57		
लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S)	ग्रामीण	100	2.98	2.34	3.4	सार्थक
	शहरी	100	1.94	1.91		

df - 198 सार्थक स्तर (.05) p = 0.000

तालिका-1 से स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) का मध्यमान 5.97 है जो कि शहरी क्षेत्र के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) के मध्यमान 4.48 से अधिक है। (M_1=5.97 > M_2=4.48) तथा प्राप्त टी का मान 4.66 है, जो 0.5 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.98 से अधिक है। अतः आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

इसी प्रकार तालिका-1 से स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर के दूसरे आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) का मध्यमान 3.66 है जोकि शहरी क्षेत्र के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर के दूसरे आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) के मध्यमान 3.35 से अधिक है (M_1=3.66 > M_2=3.35) और प्राप्त टी का मान 1.11 है जो कि 0.5 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.98 से कम है। अतः आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि तालिका-1 से स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर के तीसरे आयाम लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) का मध्यमान 2.98 है तथा शहरी क्षेत्र के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर के तीसरे आयाम लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) के मध्यमान 1.94 से अधिक है (M_1=2.34 > M_2=1.91) और प्राप्त टी का मान 3.44 है जोकि 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.98 से अधिक है। अतः आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) में सार्थक अन्तर है। गणना से स्पघ्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) और आयाम लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया जबकि एक अन्य आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

तालिका सं0 1 में निहित आंकड़ों से स्पष्ट है कि परिकल्पना सं0 1 ‘‘आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण और शहरी छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है’’ को आंशिक रूप से अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण और शहरी क्षेत्र का विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर प्रभाव पड़ता है।

आरेख संख्या-1 में ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर से सम्बन्धित आंकड़ों को प्रदर्शित किया गया है।

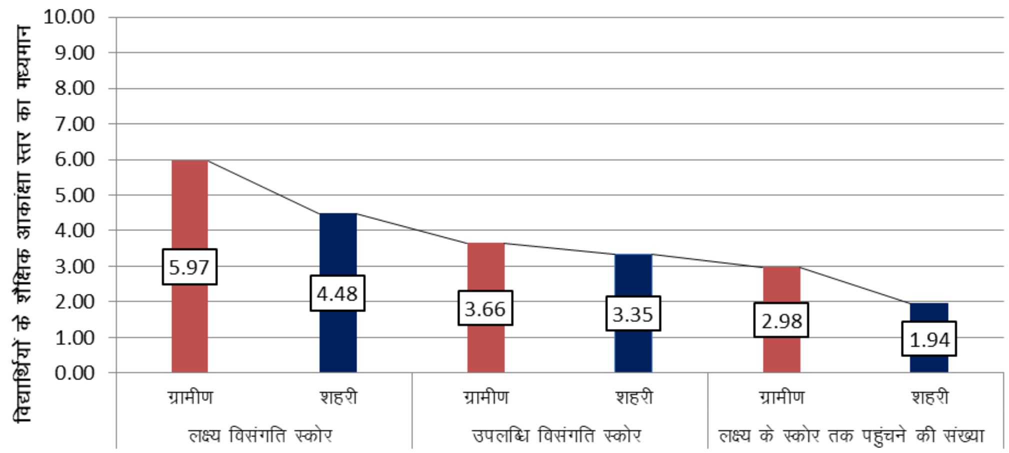

आरेख संख्या–1 : आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर

उद्देश्य-2 आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना-2 आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका-2 से स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) का मध्यमान 5.23 है जो कि आरक्षित वर्ग की संगीत में रूचि रखने वाली छात्राओं के आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) के मध्यमान 5.22 से बहुत ही कम मात्रा में अधिक है (M_1=5.23 > M_2=5.22) और आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त टी का मान 0.23 है, जो 0.5 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.98 से कम है। अतः आरक्षित वर्ग संगीत में रूचि रखने वाले छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) और संगीत में रूचि रखने वाली छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका-2 आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र एवं छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर

शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम	**लिंग**	**न्यादर्श**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी-प्राप्तांक**	**सार्थकता स्तर 0.5**
लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S)	छात्र	100	5.23	2.13	.26	असार्थक
	छात्राऐं	100	5.22	2.60		
उपलब्धि विसंगति स्कोर (G.D.S)	छात्र	100	3.55	1.96	1.11	असार्थक
	छात्राऐं	100	3.45	2.00		
लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S)	छात्र	100	2.10	1.99	2.35	सार्थक
	छात्राऐं	100	2.82	2.33		

df = 198 सार्थक स्तर (.05) p = 0.000

तालिका-2 से परिलक्षित है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्रों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर के दूसरे आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) का मध्यमान 3.55 है जोकि संगीत में रूचि रखने वाली छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर के दूसरे आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) के मध्यमान 3.45 से अधिक है (M_1=3.55 > M_2=3.45) और आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त टी का मान 0.36 है जो कि 0.5 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.98 से कम है। अतः आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

इसी प्रकार तालिका-2 से स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्रों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर के तीसरे आयाम लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) का मध्यमान 2.10 जो कि संगीत में रूचि रखने वाली छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के तीसरे आयाम लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) के मध्यमान 2.82 से कम है (M_1=2.10 > M_2=2.82) और आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त टी का मान 2.35 है जोकि 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.98 से अधिक है। अतः आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) में सार्थक अन्तर है।

आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) और आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है जबकि तृतीय आयाम लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) के मध्य सार्थक अन्तर है। आरेख संख्या-2 में आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र और छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर से सम्बन्धित आंकड़ों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका सं0 2 में निहित आंकड़ों से स्पष्ट है कि परिकल्पना सं0 2 ''आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' को आंशिक रूप से स्वीकृत किया जाता है।

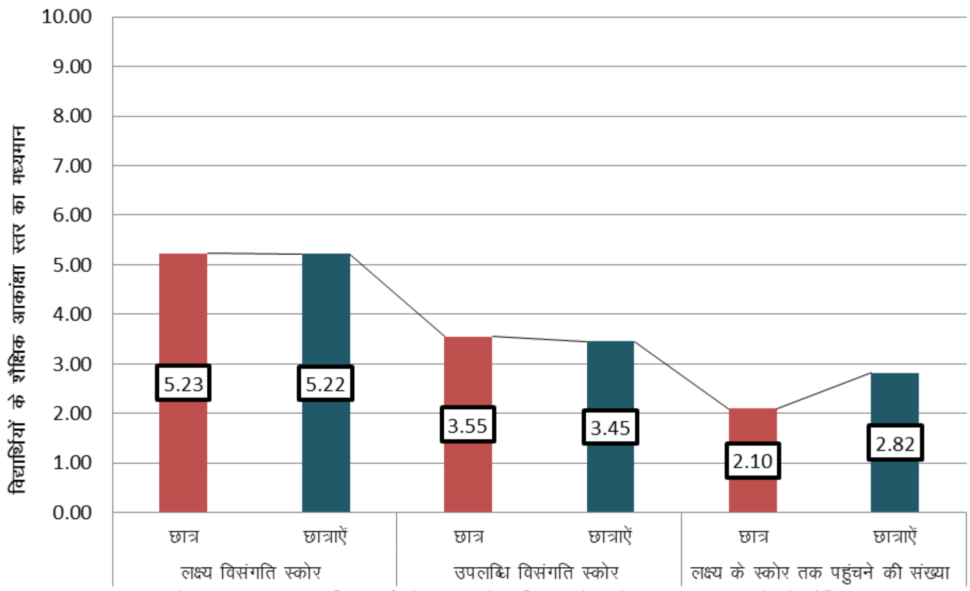

आरेख संख्या–2 : आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर

निष्कर्ष

परिकल्पना 1 के परीक्षण के आधार पर यह पाया गया कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) शहरी छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) से उच्च है। स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर का आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) संगीत में रूचि रखने वाले शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है, इसका कारण यह है कि लक्ष्य निर्धारित करने में संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण छात्र शहरी छात्रों की अपेक्षा अधिक सक्षम हैं तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर के परीक्षण मैन्युअल के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है कि वर्तमान शोध से आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले शहरी एवं ग्रामीण दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) उच्च श्रेणी का है।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर के द्वितीय आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) के विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले शहरी छात्रों के उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) की अपेक्षा संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण छात्रों का उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) अधिक है लेकिन शैक्षिक आकांक्षा स्तर के परीक्षण मैन्युल से स्पष्ट है कि वर्तमान शोध में आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर की विमा उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S)

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

उच्च श्रेणी में आता है। लेकिन संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों के उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) का मध्यमान, संगीत में रूचि रखने वाले शहरी विद्यार्थियों के उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) मध्यमान से अधिक है, जिसका कारण यह है कि संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की लक्ष्य को निर्धारित करने के बाद उन्हें उपलब्ध करने की क्षमता संगीत में रूचि रखने वाले शहरी विद्यार्थियों से अधिक है।

आकांक्षा स्तर की तृतीय विमा लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) के आंकड़ों से सम्बन्धित विश्लेषण से पता चलता है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर की विमा लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) का मध्यमान, संगीत में रूचि रखने वाले शहरी विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक पाया गया। जिससे स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों का लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) से अधिक है जिसका कारण यह है कि संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों के द्वारा निर्धारित किये गये लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने के भरसक प्रयास करते हैं लेकिन प्रयासों को पूर्ण करने में लापरवाही बरतते हैं।

परिकल्पना 2 के विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) आरक्षित वर्ग की संगीत में रूचि रखने वाली छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) से उच्च है और शैक्षिक आकांक्षा स्तर के परीक्षण मैन्युल के आधार से स्पष्ट है कि वर्तमान शोध में आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र और छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर की विमा लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) उच्च श्रेणी में आती है। आंकड़ों से यह भी स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) संगीत में रूचि रखने वाली छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य विसंगति स्कोर (G.D.S) के मध्यमान से कुछ ही अधिक है। जिससे इंगित होता है कि लक्ष्य निर्धारित करने में आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र, छात्राओं की अपेक्षा अधिक सक्षम हैं।

आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया कि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S), आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाली छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) से उच्च है तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर के परीक्षण मैन्युल से स्पष्ट है कि वर्तमान शोध आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) उच्च श्रेणी में आते हैं। लेकिन आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्रों के उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) का मध्यमान, छात्राओं के उपलब्धि विसंगति स्कोर (A.D.S) मध्यमान से अधिक है। जिससे इंगित होता है कि आरक्षित वर्ग की संगीत में रूचि रखने वाली छात्राएं अपना आंकलन करने में बहुत अधिक निपुण नहीं है।

इसी प्रकार आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) का मध्यमान संगीत में रूचि रखने वाली छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के आयाम लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या (N.T.R.S) के मध्यमान से कम पाया गया। जिसका कारण यह है कि संगीत में रूचि रखने वाली छात्राओं के द्वारा निश्चित समय में निर्धारित किए गए लक्ष्य के स्कोर तक पहुंचने की संख्या संगीत में रूचि रखने वाली छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।

अतः इसके लिए संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के सम्बन्ध में लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें प्राप्त करने के सम्बन्ध में अनेक क्रियाकलापों, जैसे स्वःमूल्यांकन, पाठ्यसहगामी क्रियाएं और शैक्षिक कार्यशालाओं का समय-समय पर आयोजन कराया जाना

चाहिए। विद्यार्थियों को शिक्षकों द्वारा समय प्रबन्धन को अवश्य सिखाया जाये। ताकि आरक्षित वर्ग के संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा सतर को ऊँचा उठाया जा सके।

सन्दर्भ

राजीव, आर0 (2020) ''अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति $2 छात्रों की समायोजन समस्याओं का अध्ययन'' The International Journal of Indian Psychology_ Article_Volume 08

राय, एम0 (2018) ''उत्तर प्रदेश के अनुसूचित जाति के छात्रों के बीच शिक्षा की आकांक्षा और अपेक्षा का अध्ययन'' *Journal of Historical Archaeology & Antirapological Science*. 3(5).

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बीच शैक्षिक और सामाजिक परिवर्तन, इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, 1981, 16(3) 1279-1284

आकांक्षा स्तर मापनी डॉ0 महेश भार्गव हरप्रसाद इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियर स्टडीज, हरदीप एंक्लेव, सिकंदरा, आगर, पृष्ठ 41-4

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार, https://www.education.gov.in/sites/upload-piles/mhrd/files/ NEP_Final_Hindi-O.pdf

Bartwal, R. S., & Raj, A. (2014). Academic Stress among School Going Adolescents in Relation to their Social Intelligence. Indian Streams Research Journal, 4(2), 1-6.

Devica, S. (2017) Educational Aspiration of Secondary School Students in Relation to Academic Achievement, International Journal of School Science and Economics Invent vol. 03, 02 May 2017. ISSN No. 2455-6289, www.ijis.in

https://link-springer.com

J. Jah, R.F.O.A., Eleno, S.N. & Dayi, J.O. (2021)The Role and Impact of Operating theater Backgorund Music on Oreo and Patients: Opening of theatre Staff. European Journal of Clinicle Medicine www.ej/clinicmed.org ISSN 2736-5476. doi:10.24018/Ej clinicmed.2021.2.s.19.

K. Shorath (2022) "A Study on level of Educational Aspiration and Anxiety among Teacher Trainees of Mysure District Karnataka" A International Open Accers, Peer-reviewed. Refereed Journal 2022 IJCRT (Volume 10, Issue 6) June 2012, ISSN: 2320-2882.

Kumar, A., & Raj, A. (2015). A Study of the Development of Primary Education in Dehradun District (Uttarakhand) from 2000 to 2011. Int. J. Res. Eng., IT and Social Sciences, 5(5), 28-42.

Kumar, Anup & Raj, Anoj (2015). A study of the Development of Primary Education in Dehradun district (Uttarakhand) from 2000 to 2011. International Journal of Research in Economics and Social Sciences, 5(5). Retrieved from https://euroasiapub.org/wp-ontent/uploads/2017/03 /12ESS May-2195.pdf

Raj, A. (2012). Teacher Training Curriculum Design: Development and Implementation. *Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies (SRJIS DE & EDUOP IATE sp),* 1(9).

Retrieved from https://www.srjis.com/assets/Allpdf/ 1469519082Anoj.pdf

Raj, A.(2012). Academic Achievement in Theory and Practical in Relation to Family Background: A Study of College Students, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies (SRJIS)1(3), Retrieved from https://www.srjis.com/assets/ Allpdf/146685236439%20Dr.%20Anoj.pdf

Raja, S. & Pantion, U. (2018) A Study of an level of educational aspiration of high school students, International Journal of Advanced Scientific Research & Management (Volume 13). https://ijoasrm.com/wp-content/uploads2019/01/ijasrm-v35121071 _216pdf

Rawat, Bharti & Dr. Raj, Anoj (2017). Study of the Effect of Educational Achievement on Adjustment of B.Ed. Pupil Teachers. International Education and Research Journal (IERJ), 3(3). Retrieved from http://ierj.in/journal/index.php/ierj/ article/view/731

S. Schjhil Sclvam. (2015) Level of Aspiration among High Secondary Students of Coimbatore District (Volume-V) Issue:6 ISSN_2250-1991. Worldwidejournal.com/paripex/recent_issue_pJP/21//june-2015-1434434 695_134pdf

Srivastava, B.N. (1966) The Education Commission Recomendation, some Reflection: NIF Journal NCERT, 1,2.

Wang, T. Zhao, Y. & Yin, N. (2022) Analysis and research on the influence of music on students' mental health under the background of keep learning. Original Research article Volume 13-2022/https://joi.org/0.3389/ Fpsyg 2022,998451 ballenberger, B. Moller, D. and Zolpour, C. (2018) Musculos Koletal Health Complaints and carres ponting risk factors among music students; study Process, Analysis Strategies and interim Results from a Prospective chorot study, Vol. 33 Number 1 September 2018m, pp. 166-174(a) DOI:https://joi.org/10,2019mppa.2018 3023